## आरती श्रीमूळलिंगाची ७६

जय देव जय देव जय मूळलिंगा। हरमूळलिंगा। मां पाहि मां पाहि दुस्तर भवभंगा।।ध्रु.।। आदि अनादि अंती सर्वांतर्यामी।

गौरीवर गंगाधर दिनवत्सलनामी।।१।। त्रिगुणतीत त्रिपुरांतक

त्रितापहारी । संकट पडल्या स्मरतां त्वरितचि निवारी ।।२।। अक्षय

अखंड अरूप न मिळे वेदांसी। माणिक मायाहारक

प्रेमपूरनिवासी।।३।।